कर्म : मानव जीवन का शाश्वत आधार

डॉ. मुकेश नायक

भारतीय दर्शन में कर्म को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है . श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने पर है, उसके फल पर नहीं . यह अमर संदेश हमें प्रेरित करता है कि हम अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करें तथा परिणामों की अत्यधिक चिंता से बचें . फल की चिंता अनेक बार भय और निराशा को जन्म देती है, जबकि कर्म पर केंद्रित व्यक्ति अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग कर पाता है .

मानव जीवन आकांक्षाओं, संघर्षों, अवसरों और उपलब्धियों का अद्भुत संगम है. इन सभी के केंद्र में एक ऐसा मूल सिद्धांत विद्यमान है, जो व्यक्ति के चरित्र, व्यक्तित्व और भाग्य का निर्माण करता है—वह है कर्म. कर्म केवल किसी कार्य को करने का नाम नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के विचारों, आचरण, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का समग्र स्वरूप है. भारतीय संस्कृति और दर्शन में कर्म को सदैव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शक माना गया है.

हमारे ऋषि-मुनियों ने सदा यह शिक्षा दी कि मनुष्य की पहचान उसके जन्म, धन या सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होती है. कर्म ही वह शक्ति है जो एक साधारण व्यक्ति को असाधारण बना सकती है, जबकि निष्क्रियता और लापरवाही व्यक्ति को पतन की ओर ले जाती है. व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर मानव प्रगति का आधार सार्थक कर्म ही है.

सृष्टि का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में कर्मरत है. प्रकृति स्वयं नि:स्वार्थ और निरंतर कर्म का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है. सूर्य प्रतिदिन उदित होकर संसार को प्रकाश देता है, नदियाँ निरंतर बहती रहती हैं, वृक्ष फल-फूल देकर दूसरों का कल्याण करते हैं और पृथ्वी बिना किसी अपेक्षा के समस्त जीवों का भार वहन करती है. जब प्रकृति का प्रत्येक तत्व अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित है, तब मनुष्य, जो सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है, उसके लिए कर्म से विमुख होना उचित नहीं हो सकता.

कर्म का सिद्धांत केवल आध्यात्मिक या धार्मिक विचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक जीवन का भी आधार है. एक विद्यार्थी नियमित अध्ययन से सफलता प्राप्त करता है. एक किसान समय पर परिश्रम कर उत्तम फसल प्राप्त करता है. एक खिलाड़ी निरंतर अभ्यास से उत्कृष्टता हासिल करता है. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का मूल आधार परिश्रम, धैर्य और कर्म ही है. केवल सपने देखने से सफलता नहीं मिलती, उन्हें साकार करने के लिए सतत प्रयास आवश्यक है.

संत कबीरदास ने समय पर कर्म करने की महत्ता को अपने प्रसिद्ध दोहे में अत्यंत सरल और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है—

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब.
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥

यह दोहा स्पष्ट करता है कि टालमटोल सफलता का सबसे बड़ा शत्रु है. जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है और अपने कार्यों को समय पर पूरा करता है, वही अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होता है.

कर्म का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि प्रत्येक कर्म का परिणाम अवश्य प्राप्त होता है. जिस प्रकार खेत में बोए गए बीज के अनुसार ही फसल मिलती है, उसी प्रकार जीवन के परिणाम भी व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करते हैं. अच्छे कर्म सम्मान, संतोष और सफलता प्रदान करते हैं, जबकि बुरे कर्म दु:ख, अपमान और असफलता का कारण बनते हैं. इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे कार्य करने चाहिए जो समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए हितकारी हों.

गोस्वामी तुलसीदास ने भी इस सत्य को अपने प्रसिद्ध दोहे में व्यक्त किया है—

कर्म प्रधान विश्व करि राखा.
जो जस करै सो तस फल चाखा ॥

यह दोहा बताता है कि संसार कर्म के नियम से संचालित होता है. प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है. इसलिए किसी भी परिस्थिति में अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं होना चाहिए.

आधुनिक युग में भी कर्म का महत्व उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था. विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, उद्योग और सार्वजनिक जीवन में जो लोग सफलता प्राप्त करते हैं, उनके पीछे वर्षों का कठिन परिश्रम और समर्पण छिपा होता है. कोई भी महान उपलब्धि बिना निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प के संभव नहीं है. इतिहास के महान व्यक्तित्वों ने अपने कर्मों के बल पर ही समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा बनने का गौरव प्राप्त किया है.

कर्म केवल व्यक्तिगत सफलता का मार्ग नहीं है, बल्कि सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय विकास का भी आधार है. एक शिक्षक का कर्म शिक्षा देना है, एक चिकित्सक का कर्म रोगियों की सेवा करना है, एक सैनिक का कर्म राष्ट्र की रक्षा करना है और एक जनप्रतिनिधि का कर्म जनता के हितों की रक्षा करना है. जब प्रत्येक व्यक्ति अपने दायित्वों का ईमानदारी और निष्ठा के साथ पालन करता है, तभी समाज समृद्ध होता है और राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है.

कर्म व्यक्ति में आत्मविश्वास भी उत्पन्न करता है. जो व्यक्ति अपने प्रयासों पर विश्वास करता है, वह भाग्य के भरोसे नहीं बैठता. वह चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करता है और असफलता को निराशा का कारण नहीं, बल्कि और अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा मानता है. यही कर्मयोग की भावना है, जो व्यक्ति को संघर्षों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देती है.

संत कबीरदास ने प्रयास और साहस के महत्व को एक अन्य दोहे में व्यक्त किया है—

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ.
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ ॥

इस दोहे का संदेश अत्यंत गहन है. सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है जो प्रयास करने का साहस रखते हैं. जो लोग भय और संकोच के कारण प्रयास नहीं करते, वे जीवन के अनेक अवसरों से वंचित रह जाते हैं.

अंतत: कहा जा सकता है कि कर्म मानव जीवन का मूल मंत्र है. यह व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है, आत्मविश्वास प्रदान करता है, सम्मान दिलाता है और सफलता की नींव रखता है. जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करने की शक्ति भी कर्म से ही प्राप्त होती है. इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के साथ करना चाहिए तथा फल की चिंता छोड़कर निरंतर कर्मरत रहना चाहिए. वास्तव में कर्म ही मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी, उसका सच्चा धर्म और उज्ज्वल भविष्य का आधार है. जो व्यक्ति कर्म को अपना आदर्श बनाकर आगे बढ़ता है, सफलता स्वयं उसके चरण चूमती है और उसका जीवन समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है. यही मानव जीवन की शाश्वत सत्यता है कि सार्थक कर्म ही प्रगति, सम्मान और आत्मसंतोष का वास्तविक आधार है.

क्लास by बड़े भाई

डर को कैसे नियंत्रित करें...

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, क्षमताओं का अम्बार होते हुए भी हमें जो बढ़ने नही देता, हम कुछ नया करना चाहते हैं लेकिन जो हमें शुरुआत करने नही देता वो है हमारे भीतर का एक डर.. हमें कहीं मंच पर बोलना है तो हमारे भीतर एक डर घर कर जाता है.

अगर आपके साथ ऐसा कुछ है तो यह विडियो बिलकुल आपके लिय है जो आपके भीतर के इस अनजाने डर को मुट्ठी में कर सकता है..

सबसे पहले यह समझिये कि यह बस आपके साथ नही है और इस डर से हर वो व्यक्ति गुजरता है जो कुछ करना चाहता है और जो कुछ कर रहा रहा है.. बस बात यह है कि वह इसका सच जानता है इसलिए अब वो डर को अच्छे से नियंत्रित कर लेते हैं..

इससे जीतने के लिए आपको तीन चीजे स्वीकार करनी होगी.. अगर आप अपने मन को यह तीन बातें मनवा पाए तो डर आसपास नही फटकेगा..

1. **डर से बचिए नहीं-** जैसे कि आपका कोई जारूरी सामान जब अँधेरे में रखा होता है तो क्या करते हैं.. उस अँधेरे का सामना करते हैं, कोई लाइट जलाते हैं और वह सामान ले लेटे हैं..क्या वहां कुछ ऐसा था जो आप सोच रहे थे.. नही था न..यही नियम सब जगह लागू होता है
2. **हम जिसमें भी नए हैं, डर होगा ही -** आप जब पहली बार स्कूल में गये थे या पहली क्लास में गये थे तो कैसा लगा था एक झिझक हुई थी या नही.. वह डर ही तो था और क्या था..लेकिन फिर्क क्या हुआ जब आप रोज जाने लगे वो झिझक और डर गायब हो गया.. फिर तो आप ही बाकियों को डराने लगे होंगे..
3. **ज्ञान और अभ्यास का भाव** डर पैदा करता है तो इस तरह आप अपने डर पर काबू पा सकते हैं...

बस यही कहना था, धन्यवाद.

समय की सलवटों को समेटती संवेदनाएं

गोविन्द सेन

पुस्तक चर्चा

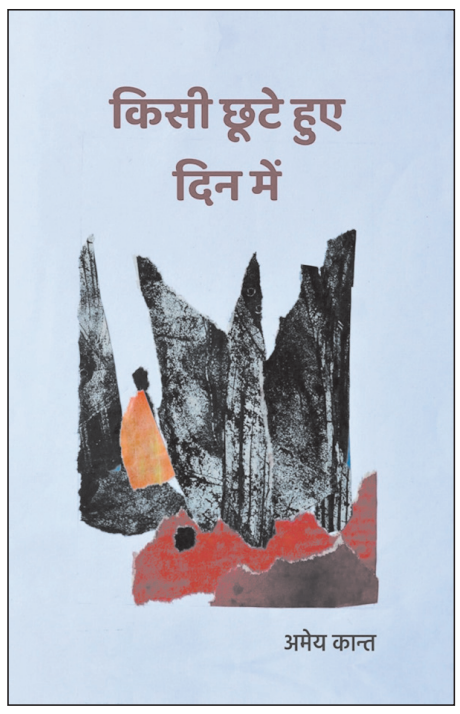

'किसी छूटे हुए दिन में'- युवा कवि अमेय कान्त की कविताओं का वेरा प्रकाशन से प्रकाशित ताज़ा कविता-संग्रह है. दस बरस के लम्बे अंतराल के बाद यह संग्रह आया है. छूटे हुए दिन की स्मृतियों के ताज़े-टटके बिम्बों से संग्रह की ये कविताएँ समृद्ध हैं. इनमें समकाल की संवेदनशील पड़ताल है, अतीत की परछाइयाँ भी हैं. समय की हर सलवट को ये कविताएँ स्पर्श ही नहीं करतीं, बल्कि उन्हें उलटती-पलटती भी हैं. समय की हर परत को सूक्ष्मता से खोलने की ईमानदार कोशिशें इन कविताओं में दिखाई देती हैं.

धीरे-धीरे कवि अपनी भाषा को अर्जित कर रहा है जो लगातार मर्मस्पर्शी होकर अपने समय की सलवटों को समेटते हुआ छूटे हुए समय को आज के समय के बरक्स खड़ी कर रही है. पीछे मुड़कर जब देखते हैं तो कई चीज़ें छूटी हुई दिखाई देती हैं, कुछ धुँधली तो कुछ साफ़-साफ़. ये बताती हैं कि कहाँ क्या और कितना छूट चुका है. वह छूटा हुआ भले ही आज अप्रासंगिक हो गया हो, पर तब कितना महत्वपूर्ण था. इस तरह यह भी संकेत है कि कहाँ-कितना है, जिसे बचाया जाना ज़रूरी है.

वैसे हर पंक्ति कविता के साँचे में महत्वपूर्ण होती है. लेकिन प्राय: इन कविताओं की आखिरी पंक्तियाँ पाठक की संवेदना को स्पर्श करते हुए उसमें कुछ नया जोड़ जाती हैं. वैसे हर कविता अपना शिल्प खुद रचती है. लेकिन कुछ कविताओं में कहानी का शिल्प मौजूद है- प्रारंभ, विकास और अंत. 'अधूरे काम', 'बचे रहते हैं शब्द', 'इस समय जब', 'बेतार समय में' आदि कविताओं में इस शिल्प को बखूबी देखा जा सकता है.

आधुनिक युग की नई तकनीक और धमाकेदार इश्तहारों के हल्ले में कुछ पुरानी चीज़ें लगातार गुम होती जा रही हैं. संग्रह की शुरुआत 'चंद्रबिंदु' कविता से होती है. इसमें केवल चंद्रबिंदु के ग़ायब होने का मसला नहीं है, यह चिंता और गहरी है. इसमें छतों से गौरेयाँ और आदमी में से आदमी के गुम होने की चिंता भी शामिल है.

इस नुकीले समय का मुकाबला सभी अपनी-अपनी समझ के अनुसार करते हैं. फेरीवालों ने अपनी गाड़ियों पर स्पीकर बाँध लिए हैं. वे बाज़ार के कोलाहल और गले की सीमाओं को समझते हुए लगातार बोलने के लिए स्पीकर जैसी मशीन को भिड़ा देते हैं. 'स्पीकर' कविता में इसे खूबसूरती से कहा गया है.

सबको अपने लिए जगह चाहिए. रिक्तता को भी अपनी जगह चाहिए. धीरे-धीरे 'रिक्तताएँ' भी अपनी जगह बनाती हैं. इसे इसी शीर्षक की कविता में जाना जा सकता है. कविता सूक्ष्म भावों को कुशलता से पकड़ती है. व्यक्ति के साथ बचपन और किशोरावस्था की स्मृतियाँ आजीवन साथ चलती हैं. साइकिल सीखने की प्रक्रिया के तीन चरणों को 'कैंची, डंडा, सीट' कविता में सूक्ष्मता उकेरा गया है.

संग्रह में शहर पर सात कविताएँ हैं. इसमें कवि ने शहर की अपनी और सार्वजनिक अनुभूति को बखूबी दर्ज किया है. अप-डाउन करने वाले शाम को घर लौट आते हैं. इनके लिए कविता की सुंदर पंक्ति निकल आती है-'शहर उनका पेड़ है.' इसी शहर में कवि को 'कचोरी-समोसों और भजियों की/एक कस्बाई गंध' तैरती मिलती है. शहर का 'पुराना सिनेमाघर/अब एक सभागार' में बदल गया है. प्रकारांतर से अब हर शहर की यही कहानी है. 'कटता हुआ पेड़' एक मर्मस्पर्शी कविता है जो पेड़ के साथ बहुत चीज़ों के कटने को दर्ज करती है. कुल मिलाकर संग्रह धैर्य की धीमी आँच में पकी मर्मस्पर्शी कविताओं का सुंदर कोलाज है. इनमें 'शहर', 'कटता हुआ पेड़', 'ख़ाली घर', 'मार्च की दोपहर', 'बहुत चलने वाली चप्पलें', 'युद्ध में स्त्रियाँ', 'दिसंबर' आदि कविताएँ पाठकों की स्मृति में चिपकी रहेंगी. आवरण संजीवनी कान्त ने बनाया है जो संग्रह की कविताओं के मूल स्वर के अनुरूप है. इसमें छूटे हुए दिन के काले साए और कुछ चटख रंग मौजूद हैं.

किसी छूटे हुए दिन में (काव्य संग्रह)
अमेय कान्त
प्रकाशक - वेरा प्रकाशन, जयपुर
प्रथम संस्करण-2026
मूल्य -200/-

कविता

तिलचट्टा

ईश्वर करुण

घूम रहा मायावी बनकर अब तिलचट्टा !
पहुँचा रातों-रात करोड़ों मोबाइल तक
अचरज में ईरान और हैं इजराइल तक
लगा रहा है दौड़ गगन में उछल-उछल कर
किंतु न पहुँचा धरती पर 'जीरो माइल' तक
चूहा चला उठाने पत्थर का सिलबट्टा !

करूँ पददलित भारत को यह सोच रहा है
सजे हुए वंदनवारों को नोच रहा है
बैठ विदेशी धरती पर षड्यंत्र रच रहा
स्वर्णमयी मिट्टी को दुष्ट खरोच रहा है !
देश विरोधी लोगों का यह चट्टा-बट्टा

नयी घोषणाएँ कर युवकों को फुसलाता
देश बढ़ रहा आगे- फिर भी झूठ बताता
'जेन जेड' को बेच रहा है झूठा सपना
दारू में चावल दे- देकर खीर पकाता !
चला लगाने भारत की कुर्सी पर सट्टा

भारत माँ के कष्ट सदा हम हरते तो हैं
जन्म भूमि के कर्ज सदा हम भरते तो हैं
अगर कह दिया गार्जियन ने 'नालायक' तो
'लायक' बनने की कोशिश हम करते तो हैं !
बढ़के जरा संभाल देश की पगड़ी जट्टा !

लघुकथा

थाली में परोसे सपने

संध्या पाण्डेय

रात की रसोई सिमट चुकी थी. चूल्हे की आख़िरी आँच भी अब धीमी पड़ने लगी थी. रागिनी ने सिंक में रखी थालियों को धोया और एक पल के लिए ठिठक गई. उसे लगा जैसे हर थाली में किसी न किसी का सपना परोसा था- पति की तरक्की का सपना, बेटे की नौकरी का सपना, बेटी की पढ़ाई का सपना. सास ससुर देवर ननद सबके लिए अच्छे अच्छे सपने. लेकिन उसकी अपनी थाली हमेशा खाली रह जाती थी.

वह चुपचाप कमरे में गई, पुरानी अलमारी से अपनी नीली डायरी निकाली और खिड़की के पास बैठ गई. बाहर आधी रात का सन्नाटा था, मगर उसके भीतर शब्द जाग रहे थे. उसने लिखना शुरू किया- 'आज फिर मैंने सबकी पसंद का खाना बनाया. सबने पेट भरकर खाया और अपने-अपने कमरों में चले गए. पर मेरी भूख आज भी बची रह गई- कुछ बनने की भूख, कुछ कहने की भूख, तारीफ के दो शब्द सुनने की भूख, अपने लिए जीने की भूख.'

उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं पर कलम नहीं रुकी- 'मैंने बरसों से सपनों को थाली में परोसा है.

कभी गरम रोटियों के साथ, कभी मीठी खीर के साथ, कभी ससुर जी की दवा के साथ,कभी सासू जी की पूजा में भोग के साथ. पर आज पहली बार अपने सपनों को इस डायरी में परोस रही हूँ. शायद यहाँ कोई उन्हें ठुकराएगा नहीं. 'तारीफ मिलेगी हौंसला बढ़ेगा.

रागिनी स्वयं को पढ़कर मुस्कुराई. रसोई में रखा खाली तवा अब उसे उतना भारी नहीं लग रहा था.

उस रात पहली बार उसे महसूस हुआ कि सपने सिर्फ़ दूसरों के लिए नहीं होते-कुछ सपने अपनी आत्मा के लिए भी बचाकर रखने चाहिए.अब तो वह सब पर लिख रही है.रसोई के हर बर्तन पर.

कविता

प्रीति धीरज जैन

प्यासे परिंदे

गर्मियों की असहनीय तपन
मनुष्य कर ले तनिक मनन
प्यासे परिंदों की बुझा प्यास
उन्मुक्त लेंगे उड़ान,कर
थोड़ा जतन

साँझ-सवेरे
भटकते हैं
दर-दर
आग सा
जलती है
खाली उदर
लू की लपटों से
हम सब झुलसे
दूर से आते उड़ते परिंदे
हर प्रहर

बूंद-बूंद
पानी को परिंदे तड़पते
गर्मी की तपन से वो झुलसते
कौन समझे व्यथा मुक मन की
ग्रीष्म की तपन से प्राण हरते

जीव दया का मन में प्रण धरो
अपने छत पर हरदिन अन्न, जल
भरो
प्यासे परिंदे अब ना तरसे
बचाकर उनके प्राण
कुछ अच्छा काम करो

परिंदों के कलरव से आंगन
चहकेगा
खिलखिलाते पक्षियों को देख
जीवन महकेगा
बेहाल ग्रीष्म ऋतु में दो परिंदों को
जीवनदान
खुशियों भरी चहचहाहट से नीला
आसमां गूंजेगा.

क्षणिकाएं

संगीता दरक माहेश्वरी

1
एक माँ और उसके बेटे चार
बहुएँ पोते-पोती भरा-पूरा परिवार
करने होते खुद को काम
मिलता नहीं बुढ़ापे में आराम
सब अपने में रहते करते नहीं परवाह
माँ-बाप की किसी को नहीं चाह.

2
इकलौता बेटा लाई माँ बहुरानी
पोते-पोती और परिवार
बसाया माँ ने घर-संसार
पास बैठ कभी कोई नहीं बतियाते
और नहीं साथ में भोजन खाते
बूढ़े माँ-बाप एक दूजे का सहारा बनते
बच्चे कहते यह कुछ नहीं समझते.

3
माता-पिता ने मिलकर बुने सपने
काबिल बनाया बेटे को अपने
बेटे का घर बसाया अरमानों से सजाया
बेटे ने माता-पिता को वृद्ध आश्रम में पहुँचाया..

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी